"राजस्थान में बौद्ध गुहा स्थापत्य : झालावाड़ के विशेष संदर्भ में"

राकेश कुमार धाबाई

बौद्ध धर्म का सामाजिक व धार्मिक क्षेत्र के साथ स्थापत्य कला के विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान है जिसके तहत स्तूप, विहार, चैत्य तथा गुहा स्थापत्य का विकास एवं उन्नयन हुआ। जनरल के वातावरण से सर्वथा दूर गिरिमालाओं में टंकित गुहाएं शान्तिमय जीवन व्यतीत करने के निमित्त उपयुक्त स्थल हो सकती थीं। उनके तराशने का वास्तविक उद्देश्य यही था। इसके प्रस्तर अधिक ठोस है। फलतः उनमें उत्कीर्ण गुहाएं अधिक चिरन्तन सिद्ध हो सकती थी। अशोक के समय तक पश्चिमी भारत में बौद्ध धर्म के समुचित प्रसार के संबंध में दृढ़ प्रमाण मिलने लगते हैं। तृतीय एवं द्वितीय शताब्दी ईसा पूर्व से यह धर्म दक्षिणापथ में सुव्यवस्थित होने लगा था। गुहा टंकण का यह कार्य तृतीय शताब्दी ईसा पूर्व से द्वितीय शताब्दी ईसवी पर्यन्त लगभग 500 वर्षों तक चलता रहा। इस काल के बीच की गुहाएं हीनयान धर्म से सम्बन्धित है। तदनंतर महायान धर्म के व्यापक प्रसार के परिणामस्वरूप निर्माण का द्वितीय काल लगभग पांचवी शताब्दी ईसवी से प्रारम्भ हुआ जो लगभग एक हजार ईस्वी पर्यन्त क्रियाशील था। पंच्चशतक की इस अवधि को हम महायान–काल की संज्ञा प्रदान कर सकते हैं। बौद्ध धर्म का उद्भव उत्तर भारत में हुआ अतः प्रारम्भिक बौद्ध गुहाएं हमें बिहार, उत्तर प्रदेश में प्राप्त होती है। कालान्तर इनका प्रचार प्रसार दक्षिण भारत में हुआ। इसी काल के मध्य में राजस्थान के झालावाड़ में भी बौद्ध भिक्षुओं ने अपना निवास बनाया जो कालान्तर में दक्षिण की तरफ प्रस्थान किया जिसके परिणाम स्वरूप दक्षिण के आन्ध्रप्रदेश क्षेत्र में अनेक बौद्ध गुहाओं का निर्माण हुआ।

शैल वास्तु के इन दृष्टांतों के दो विभिन्न रूप थे – (1) विहार तथा (2) चैत्य–गृह। विहार भिक्षु–संघ का आवास गृह था, जो ईटों के द्वारा निर्मित समकालीन मठों का शैलोत्कीर्ण अनुसरण हुआ करता था। चैत्यगृह बौद्ध मन्दिर था जो जहाँ विहारों में रहनेवाले भिक्षु पूजा हेतु एकत्र होते थे।

बौद्ध स्थापत्य कला से राजस्थान भी अछूता नहीं रह सका। राजस्थान के विराटनगर से प्राचीन बौद्ध विहार तथा झालावाड़ से प्राचीन बौद्ध गुहाओं के साक्ष्य मिलते हैं।

झालावाड़ जिला राजस्थान के दक्षिण–पूर्वी कोने पर उत्तरी अक्षांश में 23°45′20″ से 24°52′17″ एवं 75°27′35″ से 76°56′48″ पूर्वी देशान्तर में मालवा पठार के किनारे पर स्थित है। पश्चिम–दक्षिण एवं दक्षिण–पूर्व में मध्य प्रदेश राज्य है। उत्तर–पश्चिम में कोटा जिले की रामगंज मण्डी और सांगानेर तहसीलें स्थित है। उत्तर–पूर्व में बारां जिले की अटरू एवं छीपा बड़ौद तहसीले हैं।[2]

इस क्षेत्र को 'झालाओं की भूमि' कहा जाता है। 1791 में कोटा राज्य के फौजदार जालिमसिंह ने उम्मेदपुरा की छावनी के नाम से झालावाड़ नगर की नींव रखी। इसकी स्थापना झाला मदनसिंह द्वारा 1838 में की गई। 1935 में राणा राजेन्द्रसिंह ने इसका नाम ब्रजनगर रखा। झालावाड़ की भूमि जहाँ एक ओर शौर्य और वीरता से अनुप्राणित रही है वहीं दूसरी और यह कला और संस्कृति की दृष्टि से भी समृद्ध रही है। इस भू–भाग में आज भी आदिम युग की संस्कृति से मध्ययुग की कला का भण्डार अथाह रूप से देखा जा सकता है। इतिहास और पुरातात्विक दृष्टि से जिले की प्राचीन नगरी चन्द्रावती के गुप्तयुगीन अवशेष, सूर्य मंदिर व गागरोन का किला जहाँ अपने सम्मोहक व सुदृढ़ स्थापत्य तथा प्राचीन शिल्प कला सौन्दर्य से पर्यटकों की भावना को झकझोर देता है वही सैकड़ों वर्ष पूर्व बौद्ध धर्म की बौद्ध गुहाएं भी यहाँ अपने में संस्कृति कला का मोहक पृष्ठ समेटे हुए हैं। यहाँ निम्न स्थलों से बौद्ध गुहाएं प्राप्त होती हैं[3] –

- **कोलवी की बौद्ध गुहाएं**
- **गुनाई की बौद्ध गुहाएं**
- **हाथियागोड़ की बौद्ध गुहाएं/हात्यागौड़**
- **बिनायगा की बौद्ध गुहाएं**

कोलवी की गुहाएं के नाम से झालावाड़ जिले की डग उप–तहसील में स्थित पहाड़ियों के मध्य आज भी देखी जा सकती है। पूर्व में ये गुहाएं 103 थी, परन्तु अब इनकी संख्या 90 है। जो पहाड़ियों के हल्के बलुआ चट्टानी पत्थरों को काट कर बनाई गई थी। ये सभी गुहाएं कोलवी क्षेत्र में बने हाथियागोड़, गुनई तथा बिनायगा गाँवों में है। पुरातत्ववेत्ता कनिंघम ने लिखा है कि ''ये गुहाएं इस भू–भाग पर बौद्धों के वरदहस्त की प्रतीक तो है ही साथ ही राजस्थान प्रदेश में एकमात्र विशाल बौद्धकालीन गुफाजाल भी है।''[4] इस भू–भाग को देखने पर पता चलता है कि प्राचीन क्षेत्र कोलवी के आस–पास की पहाड़ियों पर, जो उक्त गाँवों में है बौद्ध भिक्षुओं द्वारा कभी एक विशाल गुहा जाल तैयार किया गया था। ये सभी गुहाएं कोलवी की बौद्ध गुहाओं के रूप में पहचानी जाती हैं। हालांकि सभी गुहाएं प्रसिद्ध ऐलोरा की गुहाओं से छोटी हैं लेकिन अपनी संख्या और सौंदर्य के कारण कोलवी की इन बौद्ध गुहाओं को ''एक और ऐलोरा'' कहा जा सकता है।

कोलवी की गुहाओं की खोज सबसे पहले सन् 1853 में डॉ. इम्पे ने की थी[5] तथा 1864 में जनरल कनिंघम ने अपनी रिपोर्ट में इन गुहाओं का वर्णन किया था। वर्तमान में इन 90 गुहाओं में चैत्य गृह, स्तूप विहार व स्तूपपूर्ण मन्दिर प्रमुख है। इन गुहाओं की विशेषता है कि ये सभी पहाड़ीनुमा टेकरी के अन्दर हीनयान शैली में इस प्रकार की निर्मित है कि यहाँ गुहा होना मुमकिन नहीं समझा जाता है।

दिल्ली–बम्बई रेलमार्ग पर नागदा से पूर्व स्थित चौमहला से 30 किलोमीटर दूर है ''कोलवी गाँव'' पश्चिमी रेलवे का यह चौमहला स्टेशन इन गुहाओं के अवलोकन के लिये सबसे अच्छा व सुविधापूर्ण स्थान है। यहीं से पूर्व की ओर कोलवी ग्राम की पहाड़ी पर छोटी–बड़ी 90 गुफायें हैं जो सतह से 200 फीट ऊँचाई पर स्थित है।[6] यहाँ कुछ गुहाएं दो मंजिली हैं जिनमें दो अग्निकुण्ड हैं। इनमें 8 स्तूप तथा 2 मन्दिर हैं, जिनकी साज–सज्जा घंटियों व चक्रों के माध्यम से चट्टान काट कर की गई है। स्तूपों में बुद्ध की कई सुन्दर लघु प्रतिमाएं हैं। इन पर चन्द्र तथा लतायें भी ऊकेरी हुई हैं। दूसरी गुहाओं में सभागृह व मन्दिर है जिनके कोटर में भगवान बुद्ध की 5–5 फुट की उच्च पद्मासन प्रतिमाएं प्रतिष्ठित हैं। कोटर के प्रवेश द्वार पर दोनों ओर दो लघु परन्तु अस्पष्ट सी बौद्ध प्रतिमाएं ऐसी मुद्राओं में हैं जिनमें पद्मपाणि और वज्रपाणि (अजन्ता) कलाकृतियों की झलक दिखाई देती है। इसी सभागृह में बाहर बुद्ध की एक खड़ी चट्टान पर उत्कीर्ण 14 फुट की प्रतिमा है। इनमें भगवान बुद्ध का एक साथ शिक्षण देने की मुद्रा में है जो बौद्ध धर्म के सन्देशों की स्मृति ताजा कर देता है। इन गुहाओं में एक बौद्ध प्रतिमा सिंहासन पर बैठी है तथा गुहाओं में भिक्षुओं के शयन के लिये तकिये और आसन्दी बनी हुई है।[7]

हाथियागोड़

कोलवी की गुहाओं से 6 किलोमीटर दूर इस गाँव में 5 बौद्ध गुहाओं का समूह है जो भूतल से 100 फुट ऊँचा है। 'यहाँ की गुहाएं सिंह की मांद की भांति लगती हैं। इन गुहाओं में एक सभागार भी है, जिसमें 25 व्यक्ति बैठ सकते हैं इसी के निकट एक

चट्टान पर ऊकेरा एक विशाल स्तूप भी है जो 41 इंच लम्बा व 120 इंच चौड़ा है। हाथियागोड़ की इन गुहाओं में एक भी बुद्ध प्रतिमा नहीं है, परन्तु ये गुहाएं 15 फुट लम्बी, 13 फुट चौड़ी तथा 27 फुट ऊँची हैं, जिनकी छतें गोलाकार हैं।

गुनाई

हाथियागोड़ के निकट ही गुनाई गाँव है, जिसमें दक्षिण की ओर 8 बौद्ध गुहाएं कम ऊँची पहाड़ी पर हैं। इन सभी की निर्माण शैली उक्त गुहाओं की ही तरह है।[8] यहाँ स्थित गुहाओं में दूसरी व तीसरी तथा चौथी गुहाओं के गवाक्षों की सुन्दर उत्कीर्ण कला अवर्णनीय है। दूसरी गुहा में भगवान बुद्ध की प्रतिमा काफी सुन्दर व आकर्षक है।

बिनायगा

कोलवी के पास ही बिनायगा ग्राम है, जिसकी पूर्वी दिशा की पहाड़ी पर 21 बौद्ध गुहाएं हैं। इनकी खोज 1922–23 में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के तकनीकी सहायक मौलवी जफर ने की थी। चट्टानों को पैने तरीके से काट कर श्रृंखलाबद्ध रूप से निर्मित की गई ये सभी गुहाएं विविध आकारों में हैं। इनमें एक गुहा काफी बड़ी है, जिसे शिल्प तथा स्थापत्य कला में बेजोड़ कहा जा सकता है। यहाँ 2 बड़े एवं एक छोटा स्तूप है। बड़े स्तूप की गोलाई 5 फीट व नीचे की 9 फीट है। उस पर भगवान बुद्ध की अनेक सुन्दर लघु मूर्तियाँ हैं।

बिनायगा की सभी गुहाएं चौकोर छतों का आवरण लिये हुये हैं। यहाँ एक गुहा दुमंजिली है जिसके पूर्वी छोर पर दो खम्भों पर टिका एक मन्दिर है जिसकी देविकाएं गवाक्ष और अलंकरण बिनायगा को दर्शनीय बनाने में चार चांद लगाते हैं। इन्हीं गुहाओं के आगे सामने की ओर विशाल बौद्ध स्तूप है। यहाँ एक आर्च टाईप का विशाल बौद्ध सभागार है, जो 15 फीट ऊँचा व 12 फुट चौड़ा है।[9] इन सभी गुहाओं की कलात्मकता बेजोड़ है। यह तो मानना पड़ेगा कि इस भू–भाग में इतनी बड़ी संख्या में यहाँ बौद्ध गुहाओं का होना इस बात का साक्षी है कि बौद्ध धर्म का राजस्थान के इस भू–भाग में काफी प्रभाव था। इतिहासविदों ने कोलवी की इन गुहाओं को राजस्थान में स्थित अन्य दूसरी गुहाओं की तुलना में सबसे विशाल माना है।[10] साथ ही इसके समूह को नालन्दा की भांति प्रादेशिक स्तर पर बौद्धधर्म का सबसे बड़ा केन्द्र भी।

पुरातत्त्वविद् कोलवी की गुहाओं को हीनयान शैली की अनुकृति मानते हैं। बुद्ध के बाद भिक्षु दगोबा या महाशिक्षक के साथ ही पूजा प्रक्रिया सम्पन्न करते थे अतः इस प्रक्रिया से ऐसी गुहाओं को ''दगोबा'' नाम से जाना जाने लगा। फर्ग्यूसन ने अपनी पुस्तक ''कैव अैम्पल ऑफ इण्डिया'' में इन गुहाओं की शैली को अफगानिस्तान व जलालाबाद से प्राप्त ''दगोबा'' से साम्यता रखती हुई माना है। सर्वेक्षकों ने इन गुहाओं का निर्माण काल ईसा की छठी शताब्दी बताया है परन्तु इनका निर्माण भगवान बुद्ध के समकालीन शिष्य सारीपुत्र महामौदग्लायन (जो बुद्ध के तिरोधान के पश्चात् बौद्ध संघ के संचालक रहे) के इंगित आह्वान पर ईसा की तीसरी शती में बुद्ध के धर्मोपदेश जन–जन में पहुँचाने वाले उनके शिष्यों की प्रेरणा से तत्कालीन समय में इस क्षेत्र के मालवा शासकों ने करवाया था।[11] जबकि कनिंघम ने इन गुहाओं का निर्माण काल ऐलोरा की गुहाओं के बाद का बताया है।[12] कनिंघम के ही विचार के आधार पर इन गुहाओं को एक और ऐलोरा कहा जाता है। अपने प्राचीन निर्माण और सुन्दर कृतियों के कारण कोवली की गुहाएं आज भी ऐलोरा की गुहाओं के स्थापत्य से कम नहीं है परन्तु पर्याप्त प्रचार–प्रसार के अभाव में इन गुहाओं का सही मूल्यांकन आज तक नहीं हो पाया है। केन्द्रीय पुरातत्व सर्वेक्षण के अधीन और राज्य सरकार की योजना में अब इन गुहाओं का रासायनिक उपचार और संरक्षण हो रहा है, जिससे इसकी महत्ता प्रदर्शित होगी और देश तथा विदेश के बौद्ध समुदाय के अनुयायी और पर्यटक शीघ्र ही इन गुहाओं का अवलोकन करने आ सकेंगे तथा राजस्थान में बौद्ध धर्म के ऐतिहासिक स्रोत के रूप में भारत के मानचित्र पर ख्याति प्राप्त कर सकेगी।

Lecturer
इतिहास विभाग
S.S.Jain Subodh P.G.Autonomous College

संदर्भ

1. उदयनारायण राव, भारतीय कला, पृ. 126.
2. आर.एल. भल्ला, राजस्थान का भूगोल।
3. राजस्थान जिला गजेटियर, झालावाड़, पृ. 505.

4. कनिंघम, ऐलेक्जेण्डर – आर्कियालाजीकल सर्वे ऑफ इण्डिया फार रिपोर्टस – द ईयर 1862–1865, भाग–2, पृ. 286.
5. इम्पे., ई. 1. द जर्नल ऑफ बाम्बे ब्रांच ऑफ द रायल ऐसियाटिक सोसायटी एडीरेड बाय द सैकेट्री पार्ट ट . 1857, पृ. 336–40 (आर्ट–III); 2. फर्ग्यूसन – हिस्ट्री ऑफ इण्डियन इन ईस्टर्न आर्किटेक्यर, भाग–1, पृ. 166–167.
6. कंवल, रामलाल – प्राचीन मालवा में मन्दिर वास्तु कला, पृ. 140 (बौद्ध स्थापत्य)
7. सत्यप्रकाश – राजस्थान के बौद्ध स्मारक, पृ. 16.
8. ढोढिया, बी.एन. – झालावाड़ गजेटियर (1964) पृ. 281.
9. जफर, मौलवी, 1. आर्कियालॉजीकल सर्वे ऑफ इण्डिया (1922), पृ. 123 व 124; 2. हाड़िया, एस.एम. – बुद्धिज्म इन मालवा, पृ. 18.
10. माथुर, घनश्याम लाल – हाड़ौती चिंतन, 18 सितम्बर, 1985 कोटा, पृ. 25.
11. पुराविद् ज्ञानेन्द्र पथिक (झालावाड़) का व्यक्तिगत सर्वेक्षण एवं अभिमत।
12. कनिंघम – पूर्वोक्त, 287.